एक नजर में

देश में वैज्ञानिक पद्धति के साथ आयुर्वेदिक औषधिय प्रणाली के सभी क्षेत्रों में उच्च स्तरीय शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध के विकास के लिए भारत सरकार द्वारा एक उच्च संस्थान के रूप में 7 फरवरी 1976 को राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान की स्थापना की गई।

राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय से संबद्ध यह संस्थान स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्या वाचस्पति स्तर पर शिक्षण, रोग–विषयक, शिक्षा एवं शोध में संलग्न है। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा के आधार पर BAMS के स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है। NIA एवं IPGTRA (वैकल्पिक रूप से) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्नातकोत्तर संयुक्त प्रवेश परीक्षा के आधार पर स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश होता है।

संस्थान 16 सदस्यों से बना हुआ शासकीय निकाय है और माननीय केन्द्रिय मंत्री, आयुष मंत्रालय द्वारा संचालित है। संयुक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में यहाँ एक स्थायी वित्त समिति है। संस्थान में विविध अनुसंधान प्रस्ताव के संचालन, नियंत्रण एवं पुनः परिक्षण के लिए यहाँ एक संस्थानिक नीति आयोग भी है। यह इसके नैतिक मुख्य बिन्दुओं के मानतिक विषयों के लिए जीव विज्ञान अनुसंधान पर ICMR द्वारा मार्गदर्शन अनुबंध पर गठित है। आयोग का पुनर्गठन जून 2010 में किया गया था।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

संस्थान में स्नातक, स्नातकोत्तर और विद्या वाचस्पति का शिक्षण और साथ में ही आयुर्वेद नर्सिंग एवं फार्मेसी में डिप्लोमा कोर्स होता है। आयुर्वेदाचार्य का स्नातक अध्ययन कुल 5वर्ष 6महिने का होता है जिसे 3 व्यवसायिक पाठ्यक्रम में विभाजित किया जाता है जो कि प्रत्येक 1वर्ष 6महिने का होता है, इस प्रकार मुख्य पाठ्यक्रम 4वर्ष 6महिने का और 1 वर्ष का प्रशिक्षण काल होता है। वर्तमान वार्षिक प्रवेश क्षमता 92 है।

MD/MS(Ay.) का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की अवधि 3 वर्ष है और यह 14 विषयों में उपलब्ध है। जोकि अगद तन्त्र, द्रव्य गुण, काय चिकित्सा, कौमार भृत्य, मौलिक सिद्धान्त, पंचकर्म, प्रसूति स्त्री रोग, रोग और विकृति विज्ञान, रस शास्त्र, शरीर क्रिया, शल्य तन्त्र, शालाक्य तन्त्र और स्वस्थ वृत है। वार्षिक प्रवेश क्षमता 104 अनुमोदित है। प्रत्येक विषय में 1 सीट केन्द्रिय सरकार नामित के लिए और 3 सीटें BIMSTEC देशों (बांग्लादेश, म्यॉमार, श्री लंका, थाईलैण्ड, भूटान और नेपाल) के लिए आरक्षित है। अभ्यर्थियों के लिए ये सीटें भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्धी कॉन्सिल के द्वारा प्रायोजित होती है।

संस्थान में नियमित फैलोशिप कार्यक्रम भी होता है जिसमें विश्वविद्यालय द्वारा Ph.D. से सम्मानित किया जाता है। यह 9 विषयों में उपलब्ध है जो कि हैः द्रव्य गुण, कायचिकित्सा, कौमार भृत्य, मौलिक सिद्धान्त, पंचकर्म, रोग और विकृति विज्ञान, रस शास्त्र, शरीर क्रिया एवं शल्य तन्त्र है। जिनमें प्रत्येक में 2 सीटें है। श्रीलंका के अभ्यर्थियों के लिए 1 सीट आरक्षित है।

आयुष नर्सिंग एवं फार्मेसी के डिप्लोमा पाठ्यक्रम की अवधि 2वर्ष 6महिने तथा प्रशिक्षण अवधि 6 महिने है। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रवेश दिया जाता है।

संस्थान अनुसूचित जाति के अभ्यर्थियों के लिए एक 3 महिने की अवधि का पंचकर्म सहायक प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम भी संचालित करता है। भारत सरकार द्वारा अनुमोदित किये जाने पर इसे सामान्य और अनुसूचित जन जाति के अभ्यर्थियों के लिए भी विस्तारित किया जायेगा।

स्नातक, स्नातकोत्तर और डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में SC(15%), ST(7.5%), OBC(27%), PH(3%) के लिए आरक्षण भी उपलब्ध है।

संस्थान स्नातकोत्तर अध्येताओं को हर महिने एक उत्तम वजीफा रूपये 15820, रूपये 16950, रूपये 18080 क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्षों में केन्द्रीय सरकार के अनुसार DA मदो सहित प्रदान करते है। Ph.D. अध्येताओं के लिए हर महिने वजीफा रु 18720 और रु 19323 क्रमशः प्रथम और द्वितीय वर्षों में समान DA के साथ प्रदान किया जाता है। प्रशिक्षणार्थीयों के लिए वजीफा रु 8900 हर महिने बगैर किसी DA के दिया जाता है। डिप्लोमा प्रशिक्षणार्थीयों को भी रु 500 हर महिने उनके 6 महिने के परवीक्षा काल के दौरान दिये जाते हैं।

संस्थान प्रत्येक वर्ष आयुष मंत्रालय के द्वारा विभिन्न विषयों पर ROTP,TOT, और CME कार्यक्रमों के आबंटित एवं स्वीकृत होने पर आयोजित कराता है।